L.N. MITHILA UNIVERSITY
DARBHANGA (BIHAR)
B.A PART- II
PAPER - social psychology.
Psychology (Honours)
TOPIC - Motivational Theories.

Dr. Pramod Kumar Sahu
Assitant professor.
Guest Teacher.
V.S.J. college, Rajnagar
MADHUBANI (BIHAR)
pramodkumarsahu2018
@gmail.com.

इस सिद्धान्त में सामाजिक व्यवहार की व्याख्या व्यक्ति की अपनी आवश्यकता (need) तथा अभिप्रेरकों (motives) के रूप में किया गया है। अभिप्रेरणा एक सतत आंतरिक अवस्था है जो एक व्यवहार या एक व्यवहारपरक घटक उत्पन्न करता है। अभिप्रेरणा का स्वरूप दैहिक (physiological) या फिर सामाजिक (social) हो सकती है। जैसे- भूख एक दैहिक अभिप्रेरक है। जबकि सम्बन्धन एक सामाजिक अभिप्रेरक (social motive) है। क्योंकि इसकी अभिव्यक्ति में प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से अन्य व्यक्तियों की उपस्थिति होती है। समाज मनोवैज्ञानिक कई सामाजिक अभिप्रेरकों का ही अध्ययन किया जाता है। जिसमें आक्रामकता, प्रतियोगिता, सम्बन्धन उपलब्धि, सत्ता तथा परोपकारिता प्रमुख है। समाज मनोवैज्ञानिकों द्वारा इस बात का भी अध्ययन किया जाता है कि किस तरह से विशिष्ट परिस्थिति तथा सामाजिक परिस्थिति व्यक्ति में आवश्यकता तथा अभिप्रेरणा उत्पन्न कर सकता है। जैसे- यदि मेरे पड़ोसी - पड़ोसी बार कॉलेज जाने से किशोरों एवं व्यक्तियों में अतिव्याप्त की भाव उत्पन्न होती है। उसी तरह से जब व्यक्ति अपने शहर या गाँव से दूसरे शहर या जगह पर चला जाता है तो उसका स्थापित सामाजिक सम्बन्ध नेटवर्क टूट जाता है। और दोस्तों एवं अन्य परिचित व्यक्ति से सम्बन्ध विच्छेद हो जाता है। ऐसी परिस्थिति में उसमें दोस्ती, घनिष्ठता तथा साथ - साथ रहने की अपूरित आवश्यकता उत्पन्न हो जाती है। छात्रों को जब कॉलेज में दोस्त बनाने की आवश्यकता उत्पन्न होती है।

॥

तो वे शौकत से सदस्य बन जाते हैं। सामाजिक घटनाओं में भाग बढ़ता है। तथा कैन्टीन में जाकर नये-नये अपरिचित छात्रों से बातचीत करके दोस्ती बढ़ाते हैं। कभी-कभी यह भी देखा गया है कि छात्रों को किशोरों में दोस्त बनाने की अपूरित आवश्यकता उन्हें धूम्रपान या सिगरेट लेने की आदत उत्पन्न कर देती है। क्योंकि अपूरित आवश्यकता से उत्पन्न शर्म या तकलीफ से वे धूम्रपान या सिगरेट लेकर कम करने लगते हैं। धीरे-धीरे सिगरेट आसक्ति हो जाती है। और अंततः धूम्रपानी बन जाते हैं।

(1) (Psychoanalytic theory) मनोविश्लेषणात्मक सिद्धांत- सिगमंड फ्रायड द्वारा प्रतिपादित सिद्धांत से मनोवैज्ञानिक सिद्धांत कहा जाता है। इस सिद्धांत के अनुसार व्यक्ति व्यवहार कई अर्थों में व्यक्ति के बाल्यावस्था की अनुभूतियों को प्रतिबिंबित करता है। इस सिद्धांत के अनुसार व्यक्ति विकास के आरम्भिक वर्षों में कुछ निश्चित अवस्थाओं से होकर गुजरता है। ऐसी अवस्थाएँ पाँच होती है। मुखावस्था गुदावस्था, लिंगप्रधानावस्था, अव्यक्तावस्था तथा जननेन्द्रियावस्था, सामान्यतः मुखावस्था जीवन के प्रथम साल, गुदावस्था 2 से 3 साल, लिंगप्रधानावस्था पाँच 5 साल - 13 साल से आगे निरन्तर चलने वाली अवस्था होती है। व्यक्ति किसी भी अवस्था पर स्थायीकरण को अनुभव कर सकता है। जिसके परिणामस्वरूप वह उस अवस्था की कुछ विशेषताओं को बाद की अवस्थाओं में भी दिखलाता पाया जाता है। जैसे मुखावस्था में स्थायीकरण होने से बच्चे आगे की अवस्थाओं में पहुँचने के बाद भी अंगूठा चूसना, धूम्रपान करना तथा अत्यधिक भोजन करने जैसे व्यवहार करता पाया जाता है।

Scanned with CamScanner

III

अनैच्छिक व्यवस्था का आंतरिक प्रतिफल नहीं होता है। कि व्यक्ति एवं असामाजिक कार्यों के रूप में समाज के पाया जाता है। अनैच्छिक व्यवस्था का आंतरिक प्रतिफल यह होता है कि व्यक्ति एवं असामाजिक कार्यों के रूप में पाया समाज के सामने आता है और समाज के नियमों एवं मूल्यों को स्वीकार करते हुए असामाजिक व्यवहार करता है।

मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से जीवन की संरचना एवं महत्वपूर्ण संरचना है। व्यक्तित्व के एक विशेष विस्तृत भाग होता है। जिसमें इच्छाएं, आवेग तथा मूल्य आदि अवस्थित होते हैं। और जो व्यक्ति के व्यवहार को प्रभावित करता है। व्यक्ति जीवन में जो कई क्रियाओं से अवगत तो नहीं रहता है परंतु व्यक्ति का व्यवहार इन अचेतन अभिप्रेरकों तथा चेतन क्रियाओं द्वारा प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित होता है। सामाजिक व्यवहार एवं अचेतन अभिप्रेरकों द्वारा अधिक तक प्रभावित होता है। यह कारण है कि फ्रायड ने समाज मनोवैज्ञानिक तथा आत्महत्या व्यवहार को जन्मजात जीवन मृत्यु मूल प्रवृत्ति का परिणाम माना है। इसी तरह से एडलर तथा उनके सहयोगियों ने यह विचार व्यक्त किया है कि अचेतन इच्छाओं के प्रति पूर्वाग्रह के कारण बाल्यावस्था की अनुभूतियों पर ध्यान देकर उन्हें समझा जा सकता है।

(ii) व्यक्तियों की आवश्यकताओं का पदानुक्रम सिद्धांत —

(i) आत्मसिद्धि आवश्यकता — इसमें व्यक्ति अपने भीतर छिपे अन्तः शक्तियों की पहचान करके उसके अनुरूप व्यवहार करता है।

(iii) सम्मान की आवश्यकता — इसमें दो तरह की आवश्यकता सम्मिलित होती है। आत्म सम्मान की आवश्यकता तथा दूसरे से सम्मान पाने की आवश्यकता — पहले प्रकार की आवश्यकता वृद्धि, उपयुक्तता, उपलब्धि, स्वतंत्रता आदि से संबंधित है तथा दूसरे से सम्मान पाने की आवश्यकता में दूसरे से सम्मान,

पश्चात् प्रशंसा, ज्ञान तथा स्वीकृति पाने की आवश्यकता की पूर्ति करता है।

(iii) स्वाधीनता एवं स्नेह की आवश्यकता - स्वाधीनता की आवश्यकता में परिवार एवं समाज में एक प्रतिष्ठित स्थान पाने की आवश्यकता तथा अपने लोगों से स्नेह की सहानुभूति प्राप्त करने व परिवार के सदस्य [illegible] बनाये रखने की आवश्यकता सम्मिलित होती है। स्नेह की आवश्यकता में दूसरों को स्नेह देना तथा दूसरों से स्नेह पाने की आवश्यकता भी होती है।

(iv) सुरक्षा की आवश्यकता - इस आवश्यकता में शारीरिक सुरक्षा, स्थिरता, निर्भरता, संरक्षण, डर से मुक्ति आदि की आवश्यकताओं से मुक्ति की आवश्यकता सम्मिलित होती है।

(v) दैहिक या शारीरिक आवश्यकताएं - इस श्रेणी में भोजन करने की आवश्यकता, पानी पीने की आवश्यकता, यौन की आवश्यकता तथा शारीरिक तापक्रम को बनाने की आवश्यकता सम्मिलित होती है।

मैस्लो के अनुसार निचले स्तर की आवश्यकता की पूर्ति होने पर व्यक्ति ऊपर स्तर की आवश्यकता की पूर्ति करने का प्रयास करता है। सबसे निचले स्तर की आवश्यकता दैहिक या शारीरिक आवश्यकता है। तथा सबसे ऊपर स्तर की आवश्यकता आत्म-सिद्धि की आवश्यकता है।

Dr. Pramod Kumar Sahu,
Date - 27/08/2020.
Sub - Psychology.

Scanned with CamScanner